अध्याय 4

भवाई लोक नाट्य का सामाजिक अध्ययन

भवाई लोक नाट्य के रचिता या पिता असाइत ठकार को माना जाता है। उन्होने 13वी से 14वी सदी म उनका जन्म माना जाता है। असाइत जी माताजी के भक्त थे साथ म अच्छा गाना भी गाते थे। असाइत के समय म गुजरात म मुसलिम का राज था। उंझा गाँव म हेमला पटेल जो असाइत के मित्र थे उनको बेटी गंगा को अल्लाउद्दीन खिलजी का सूबा उठाकर ले गया। हेमला पटेल बहत चिंतित थे यह बात जब असाइत को पता चली तो वह खिलजी के पास जाके कहने लगे यह "गंगा हमारी पुत्री छे माटे मुक्त करो।"1 यह बात सुन कर खिलज्जी ने भी एक शत राखी के आप दोनों एक थाली म भोजन करो गे तो आपको गंगा को दे दूंगा। असाइत ने समाज को परवा किए बिना गंगा के साथ एक थाली म भोजन किया उसके बाद गंगा को लेके असाइत हेमला पटेल के घर आ गए।

यह बात तो पूरे उंझा शहर म फेल गई असाइत जाती से ब्राह्मण थे और हेमला पटेल जो कनबी ज्ञाति का था। उस समय ज्ञाति का भेदभाव बहत ही चलता था। पूरे समाज म असाइत को ज्ञाति से बाहर कर दिया उसके साथ उनके पूत्र को भी बाहर कर दिया। कोई उनके साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं करगे। असाइत तो गायक था तो वह उंझा म ऊमीया माँ के मंदिर म आके गाने लगा और कहा जाता है को उसी समय उन्होने भवाई के 365 वेशो को रचना को थी। उसी समय माताजी ने प्रसन्न होके असाइत को चूड़ी चाँदला, भूंगल दिया और कहा यह तू गाना और समाज म अपना गुजरान करना।

हेमला पटेल ने भी असाइत को लेखित म दिया को हमारे समाज के लोग आपका भरण पोषण करगे और आपका पालन भी करंगे आज भी यह नियम चलता आया है। असाइत यह सब लेके जो वेश रचे थे वह लेके दरबदर जाने लगे। पहले तो वह केवल गाते थे पर उन्होने देखा को समाज के लोगो को गाने के साथ साथ अगर नाट्य के रूप म दिया जाए तो उन पर असर पड़ेगी। यही वेश लेके वह अपना भूंगल लेके समाज के समान ने समाज म होने वाले कुरीतियों के वेशो का प्रस्तुतीकरण शुरू किया।

भवाई म मुख्यत्वे समाज के वेशो का परिचय मिलता है। कहा जाता है को आजे समय म भवाई के 365 वेशो म से गणेश, काली का वेश ही रह गया है। समय के साथ यह वेश भी लुप्त होते गए है। भवाई के वेश म पौराणिक वेश का भी समावेश मिलता है।

भवाई म पारंपरिक सामाजिक वेश

जूठन, छेल-बटाऊ, काजोड़ा, मिया-बीबी,झंडा-झुलण,दलीत, सरानिर्या, मुंडा, पावई

भवाई म वेश को शुरुआत गणेश जी के वेश से ही को जाती है। गणेश भवाई को रक्षा करते है। नायक सफ़ेद या हरा वस्त्र शिर पे ओड़कर आता है। वह मंडप म आगे-पीछे चलकर आ जा करता है। यह समय पर गीत गाते है को:-

"लांबी सूंठ आवे मलपता देव सूंढाड़ा,

तने गणपती लांगु पाय देव मारा विधन हरो।"2

उसके बाद भवाई म बाको के वेशो को शुरुआत होती है।

भवाई म सामाजिक वेश

1. जूठन :

जूठन वेश म एक फकोर है। वह फकोर को दो बीबी भी होती है। जूठन वेश म फकोर जो होता है वह जूठ बोतलता है। यहा पर वेश म कल्पित वह दिल्ली का बादशाह का सगा बताया जाता है। वह पागल को तरह था, वह अलमस्त होके गुमता था।

भवाई म यह वेश को शुरुआत मंडल को खुश करने के लिए और सब जगह पर अपने मन का विचार चल रहा होता है। उसे बदलने के लिए यह वेश को शुरुआत कराते है। वह जो फकोर होता है वह घेली भाषा म बोलके स्वांग जैसा बोलता है को।:-

" अनि हो हलोलक साई के पंथ दोहेला रे मिया.... ऐसा ताथई ता .... थई" 3

फिर सब को सलाम करके बोलता है को :-

" बेठेकू बेठी सलाम, खडेकु खड़ी सलाम, अमेरी सलाम.... ऐसा ता थई....."4

जूठन भी भाषा होती है वह मिश्रित भाषा हम मिलती है वह गुजराती, हिन्दी और उदू का समन्वय मिलता है। जब असाइत का समय था तब यहा पर मुसलिम का भी राज था उसको असर उनके वेशो से पता चलती है। यह वेश न केवल हिन्दू या मुसलिम के लिए था यह तो पूरे समाज के लिए किया गया था।

जूठन जो होता है वही फकीर है। हाथ मां कंबर सबका चेड़ करता वह घेली भाषा म बोलता है को राजपूत, ब्राह्मण को पत्नी गरबा किस तरह से खेल ते है उनको नकल करके सब को हसाता है। फिर उनको जोरू को बुलाता है। उनको दो पत्नी होती है एक का नाम लाल और दूसरी का नाम फूल है। पर अभी उनको एक को बीबी चटको और दूसरी का नाम मटको करके बूलता है। उनको उम्र छोटी होती है। भवाई म छोटे बच्चे को लाया जाता है वह दोनों बीबी का नाचना, कूदना, बोलना आदि आए तो आगे भवाई के वेश के लिए आगे अच्छा करेगा ऐसा माना जाता है। भवाई म यह वेश जिसको नहीं आता है उसे बेवफूक माना जाता है। चटको जो है वह होशियार है और मटको हो है वह पानी भरने का कम करती है।

" गोड़ी पूछे सुन गोड़ीआ कोण भलेरो देश;

सुखीआं तो देश भला, नहिंतर परदेश।" 5

जोरू परदे म से बाहर निकल कर बोलती है। "ग्वालगढ़से मेरेबना, ग्वालगढ़से मेरेबना।"6

यहा पर जूठन जो होता है वह समाज का दपण दिखाता है। उनका संवाद चलता रहता है को अगर किसी के घर का खाना खायगे तो उनके जैसे हो जाते है।

" बीबी: बंदी तो हिंदुवानी हो गई...

जूठन : क्यों

बीबी: बामण का पानी पीआ ऐसी

जूठन : म भी हिन्दू हो गया....

बीबी : कैसे??

जूठन : हिन्दू का पानी पीआ ऐसे .... "7

यह वेश म समाज के नात जात के भेद भाव को भी बताया है। यह इसलिए सामाजिक वेश बताया जाता है को एक फकीर होकर भी वह शादी सुदाह है उनको दो-दो बीबी भी है। समाज म हो रहे बावा को जो बात है वह उस समय से लेके अभी तक को भी यही चला आ रहा है। फकीर लोग नाम से वह सब साधु होते है उनके सही रूप से पाखंड ही भरा पड़ा होता है। उसका सही रूप भवाई म असाइत जी ने दिखाया है को पाखंडी बाबा कैसे होते है।

दूसरी बात यह वेश म मिली है को नात-जात का भेदभाव देखने को मिलता है आप किसी भी धम के हो अगर अपने दूसरे धम के लोग के घर का अगर पानी भी पिया तो आप उस धम के लोग कहलाने लगते है। यहा असाइत के समय म जो असाइत ने एक हिन्दू लड़को को रक्षा को तो उसे किस तरह से जाती से बाहर कर दिया था। असाइत हिन्दू ही था फिर भी यह हवा तो यहा पर तो हिन्दू मुसलिम को बात को है।

2. छेल-बटाऊ :

यह वेश को कथा यह है को- दिल्ली के बादशाह के लिए लालबटाउ यानि छेल-बटाऊ सेना का समान लेने पश्चिम को तरफ जाता है। उसके साथ उसका एक मित्र "सांतेलो" से आता है। वह युद्ध के समान को पोहचाकर वापस आता है तब मांडवगढ़ को मोहना राणी से प्रेम हो जाता है। वह एक ही बार मिलते है, उसके बाद वियोग ही होता है। उसके मित्र से वह चिट्ठी भेजता है और मिलता है।

भवाई म यह वेश को करने के लिए दोनों के बीच पदा होता है। एक दूसरे के वियोग को बात कराते है। मोहना को फरियाद होती है को

"प्रीतम प्रीत लगे के दूर देश मत जाओ,

सूखे रहो तुम नग्रम हम लावे तुम खाओ..."8

दोनों के बीच समाधान हो जाता है, पर छेल बटाऊ मर जाता है। एक फकीर आके उसे जिंदा करता है। छेल बटाऊ मोहना से हाथा बोली करके चला जाता है। यहा पर बोध वचन भी है। वह आज्ञा पालक होता है। वह वैराग्य के वचन से सबको सीख भी देता है। वह ईश्वर को भी प्रसंसा करता है।

" देखो रे हजरत को करणी, साहबने केसे आदमी बनवाऐ हो... एक पंच भाई मिले, ओरत पाई,
खोदाने उसका बागोना किना, हेमा जाके हाड़ज गाले..." 9

यहा पर महाभारत का द्रष्टांत दिया गया है। मुरादशाह बादशाह के समय का वणन करके आगे चलता है। उसका सार यह निकलता है को असली मुसलमान जो होता है वह 'हंडी फेरवावी' ओर उसके साथ 'पानानु बिडु फेरववु' यह अथ होता है। वह एक बार बोल दे तो वह काय पूण करना पड़ता है।

इस वेश म स्त्री पुरुष के मयादा को बात कही है। होली के समय रंग खेलते समय सब अपनी मयादा भूल जाते है उनका वणन किया है। यहा पर समाज म जो अनैतिक संबंध को भी बात बताई है। स्त्री के ऊपर पिचकारी करने से गुप्त प्रेम सब के सामने आ जाता है।

"प्रीत ऐसी कीजिए, जैसा टंकण खार,
आप जले पर रीझवे भागा सांधे हाड़ "10

यह वेश म मनुष्य को जीवन सबसे प्रिय होता है, पर जब यह बात शत्रु पर आती है तो उसे मारने का कोई भी दया भाव नहीं रखते है। यहा पर समाज म भी वेर को जो भावना होती है वह सहज रूप से दिखाई देती है। इस वेश म भाषा जो होती है वह उदू मिश्रित होती है।

3. कजोड़ा :

यह भवाई का वेश जो है वह महत्वपूण माना जाता है। यह आधुनिक समाज से भी जुड़ता है। यह वेश म बाल लग्न पे प्रहार किया है। यह वेश म रंगलो का भी एक स्थान दिया है। एक छोटी उम्र को लकड़ी को शादी बड़े उम्र के से करवाते है।

"सांज पड़े दिन आथमे, ए दूख क्यां जई रहीऐ

नाना-वर नि वेदना रे, कून्भेश्वर रे विनवु रे, कुंभे श्वर ने कहिए।" 11

लड़को जो होती है वह अपने दिल को बात किसी को नहीं कह सकती है। लकड़ी के दुख म माँ-बाप साथ होते है पर यहा पर तो उसको शादी पैसो के कारण एक अमीर आधे उम्र के ठाकोर से करावा देते है। लड़को अपनी समस्या किसी को नहीं कह सकती है। शादी म जो शारीरिक सुख होता है वह भी उसे नहीं मिलता है। उसका पति उसे खुश नहीं रख पता है। वह अपनी समस्या भगवान को बताती है।

आज भी आधुनिक युग म भी कही कही जगहों पर यह बाल विवाह को देखा जा सकता है। खास करके यह मुसलिम और मारवाड़ी मे आज भी देखा जाता है। कही जगह पे तो पैसा देके बेटी को ब्याह किया जाता है। असाइत ने उस समय को बात है फिर यह वेश को हम आधुनिक भवाई म भी देख सकते है। कही कही पे तो बचपन म जो शादी होती है उसम पति छोटा रह जाता है और जो कन्या होती है उसका शरीर उचाई से बढ़ जाता है। आज के बॉलीवुड म भी हम देख सकते यह तो भवाई ने बहत पहले ही सामाजिक कु रिवाज को दिखाया था, पर आज के समय म तो यह एक फेशन भी बन गया है।

कजोड़ा वेश म पति को उचाई कम होती है तो :-

"ठकोर : रंगला, एमने पूछ के शा मसे आवया चे?

रंगलो: भाभिजी, तमे शिद आव्या छो?

ठकराना: अमे तो ठकोर नु वगोणु करवा आव्या छीए.

ठाकोर: तो रंगला, अमेय एमेने वागोविशु

रंगलो : भाभिजी, तमे वागोणु करशो तो अमारा ठाकोर छे तो रोंगना जेवड़ा पैन कोई गांज्या जाय तेवा नाथी। " 12

यह वेश म समाज का दशन असाइत ने करवाया है।

4. मिया बीबी:

यह भवाई वेश म मुसलमान का पात्र होता है। यह ग्वालियर का मुसलमान बताया जाता है। यह वेश म प्रणय त्रिकोण को रचना है। जहा प्रेमी को आशंका, वही पर सुखद मिलन के प्रसंग भी आते है। यह वेश म चटको के नाम पे बीबी पात्र को नई भवैया को खेलने देते है। यह वेश आवाना से होता है।

वेश म अवना के बाद वेश को शुरुआत हो जाती है। "मारा मिया ऊंचा, मारा दियर लश्कर मां छे, मारा सासु सुंदरी छे, अने ससरा एदलखा छे"13 यहा पर बीबी पति व्रता होती है। यहा पर किसी से भी भरोसा किया नहों जता है। अपना मित्र, करभरी हो या नोकर अगर कुछ गलत करे तो उसे शिक्षा करना राजा का धम है। वह नहों करता है तो भगवान का गुनेगार बन जाता है। यहा पर सभी लोग स्त्री को उपेक्षा कराते है, क्या किसी पुरुष दोषी नहों होता है। यह बात मियाबीबी के वेश म मिल जाती है।

5.झंडा-झूलन:-

यह वेश के शुरुआत म ही वाणियाँ का वेश आता है। वाणियाँ सही रूप से प्रकट करता है। उनका नाम 'नापलों कह कर वह लांच से अमलदारों के सामने प्रगट करता है। वह एक बार लेता है वह आपस करता नहों है। "लउ तेनु पाछु ना आपु"14 नापला का अथ यही होता है को एक बार जो ले तो वह आपस नहों देता है।

मूख उसी तरह से वताव करता है जैसे को वह उसकेरता नहों है। वह मुरखाई का अतिशयोक्ति का द्रष्टांत देता है। दुष्ट मनुष्य होगा वह अपने पति को छोड़कर वह दोसरे के साथ जाती है उसे आज भी समाज गाली ही देता है। वेश म जो तेजा होती है वही करती है। जो अच्छा काय करता है उसे किति मिलती है बुरे लोग को कभी किति प्राप्त नहों होती है। तेजा बाल्य अवस्था म वह एक गरीब था बाद म वह धनवान बना उसने देश का परिवतित किया। उसने अपना गाँव का मरम्मत करने के लिए झंडा को दिया था। तेजा एसे वर से शादी को थी वह कभी खुश ही नहों थी।

यह वेश म झंडा को फकीर समजा जा सके या वह अपने पत्नी को कुकम करने के लिए वह लेके जाता है। वह एक तरफ भाषण करता है वही दूसरी और अपने पत्नी को रक्षा भी नहीं करता है। यहा पर वेश म यह दिखाया है को अगर समाज म कुछ अच्छे भाषण करने वाले जो लोग होते है उसका यह मतलब नही है को वह चरित्र से भी बुरे होते है। ऐसे लोग को सजा होना जरूरी है।

भवाई कलाकार इस वेश को कोई धम से न जोड़कर समाज को दृष्टि से देखने को मिलता है।

"दोरी हवलशा पिरनि हीर हिंचो लाखाट,
सासरी म जो सुख नहीं तो तीजी चलो हमारे साथ। "15

6. दलित का वेश:

यह वेश म लोक समाज म जो दलित जात के लोग का शोषण होता है उसका वणन किया है। असाइत के समय म यह तो था पर आज आधुनिक समाज होकर भी हम उसके शिकार बन गए है। वेश म बहत मामिक रूप से दलित पर जो ब्राह्मणों ने दलित पर जो शोषण किया है वह दिखाई देता है। " धनी ए दलित सजव्या मारे नाथे सरजाव्या"16 स्वग म कोई भी जात बाधक नहीं होती है। वह पे सब एक ही माना जाता है। वह लोग खुद को अपवित्र नहीं मानते है। फिर भी आज का जो समय होता है वह ज्ञाति भेद का भी माना गया है। बहत सारी जगह पर यह आज नहीं रहा पर ऐसा नहीं कह सकते को आज समाज उसे मुक्त हो गया है।

असाइत ने अपनी जो ज्ञाति का भेद सहन किया और उसने समाज म रहे दलित वग को भी देखा है। वेश म तालाब म जो जोशी ने दुख दिया वह यहा पर दिखाई देती है। समय के साथ उसका कायदा बना पर वह उतना अमल म नहीं आया है।

7. सरनियानो वेश :

भवाई का यह वेश समाज म जो लोग शादी तो कर लेते है पर अपनी पत्नी को खुश नहीं रख पता है। मणियों और रुड़को दो पति पत्नी का पात्र है। भूंगल साथ ही उनका आगमन होता है। रुड़को अपने पति से अच्छे कपड़े को मांग करती है तो वह कहता है को :-

"मानियो: पैसा क्याथी लावू? तारो बाप कमाई ने मोकले छे?" 17

यह संवाद केवल उस तक सीमित नहीं रहा है हम भी आज के युग के होके भी आज भी दहेज को मांग होती है। असाइत ने बहत ही मामिक रूप से बताया है। अपनी पत्नी को मांग नहीं पूरी कर पता है तो वह उसे गली भी देता है। यहा पर जो स्त्री दिखाई है वह डरपोक नहीं है। वह सब का सामना करना जानती है। अपने पति से कहती है को कुछ कमाता नहीं है फिर भी इतनी मार पीट करता है।

नायक का आगमन होता है वह दोनों को झगड़ ने का कारण पूछता है। और कहता है को आप दोनों कमाई करो तो आसानी से घर चल सकता है। वह दोनों एक दूसरे को ताना बाजी करते है।

" मानियों: तू मने मारकणों के छ एम?

रुड़को : तू मने वाढकनी के छ एम?"18

वेश का अंत झगड़ ने से पूरा होता है। यह वेश हम पत्नी पति को आपसी समझन का सही रूप दिखा देते है।

8. पावैनो वेश :-

यह वेश म प्राणी के प्रति जो संवेदना होती है वह दिखाया गया है। यह एक धामिक रूप से भी जोड़ा गया है। यह वेश हर भवाई मंडली करती है।

पाटनवाड़ा म गंगो गामेती गांगावाड़ा का मालिक था उस के पास बहत सुख था पर उनको एक बेटा नहीं था। उसके पास एक गंगा नाम को एक गाय थी उसका बच्चा वछराज नाम का एक बछुवा था। राजा- रानी को दोने के ऊपर अति स्नेह था।

एक दिन वह डायरा देखने जाता है और वही पे गोवल गंगा और वछराज को लेके जाता है वही पर राजा को उसे काटने का मन होता है। वाघरी से उसको कटवा देते है। रानी उसे देखने को निकली वह मारा हवा देखके वह भी तड़प तड़प के मर जाती है। मरते वक्त कहेती है को " हे परमेश्वर, जो म शुद्ध मन थी पतिव्रता पाड्यू होय तो आ वछराज मारे पेटे पुत्र थाई अवतरजो अने वाडारनार नु खाड़ पानी विनानु मृत्यु थर्जा। तेनु सत्यानाश जजो " 19

उसिके साथ उसको मृत्यु हो जाती है और दूसरे जन्म वह उज्जैन म लेती है और रूप सिह के रूप म वछराज भी जन्म देता है वह पार्वा बन जाता है। राजा उसे केद करने को कोशिश करता है पर वह नहीं होता है। माताजी उसको रक्षा करती है। उसे स्त्री के पोशाक देके कहा को तू वेश करना म तेरी रक्षा के लिए आ पवन को तारह आ जवुंगी।

इसी तरह भावाई म सामाजिक वेश मिलता है।

निष्कष

यह अध्याय म समाज म जो कु रिवाजो चल रहे है उसे सही रूप से नाटक के मध्यम से भवाई कलाकार ने लाए है। वह समय था जब कोई दृश्य का मध्यम नहों था उसी समय असाइत ने यह वेषों को रचना करके समाज जो उझागर करने को कोशिश को है। समाज म आज भी वह रिवाजो कही ना कही हम देखने को मिल जाता है। आज भी भवाई के यह वेश हमे उतने ही महत्व रूप से उपयोग होते रहे है। यह नाट्य एक सामाजिक के ऊपर ही अधिक प्रयास किया गया है।

संदभ

1. गुजरात नु लोकनाट्य भवाई (भवाई वेशो साथे), रतिलाल सां। नायक, आदश प्रकाशन, प्रथम आवृत्ति 2011, पृ. 7

2. आपनु लोक नाट्य भवाई, जयमल्ल परमार, प्रवीण प्रकाशन, प्र. □. 2017, □.99

3. □□□□ □ग्र□, □□□□□ रू□ □□□, □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□त□ □□□□□□, □□□□□□□, द्वि□□. 2003, □.124

4. □□□□ □ग्र□, □□□□□ रू□ □□□, □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□त□ □□□□□□, □□□□□□□, द्वि□□. 2003, □.124

5. □□□□ □ग्र□, □□□□□ रू□ □□□, □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□त□ □□□□□□, □□□□□□□, द्वि□□. 2003, □.125

6. □□□□ □ग्र□, □□□□□ रू□ □□□, □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□त□ □□□□□□, □□□□□□□, द्वि□□. 2003, □.125

7. □□□□ □ग्र□, □□□□□ रू□ □□□, □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□त□ □□□□□□, □□□□□□□, द्वि□□. 2003, □.126

8. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.86

9. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.86-87

10. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.87

11. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.88

12. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.96

13. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.60

14. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.74

15. □□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□, □□□ प्र□□□□, प्र.□. 2011, □.80

16. [illegible] [illegible]प्रा[illegible], [illegible] रू[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]ट[illegible] [illegible], [illegible],
ड्[illegible]. 2003, [illegible].118

17. [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] प्र[illegible], प्र.[illegible]. 2011, [illegible].148

18. [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] प्र[illegible], प्र.[illegible]. 2011, [illegible].149